श्रीलाल शुक्ल के कथा-साहित्य में मानव-मूल्य

हिन्दी में पीएच.डी उपाधि हेतु
शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशिका
JV'n डॉ. निरूपमा हर्षवर्धन

शोधार्थी :
JV'n कृष्ण कुमार
ENROLLEMENT NO. JVR-II/16/8003

मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग
प्रबंधन एवं मानविकी संकाय
ज्योति विद्यपीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, भारत
जनवरी 2017

प्रपत्र शोध कार्य

(1) शोध विषय का परिचय :

मानव–मूल्य :

मूल्य शब्द से सामान्यतः जो अर्थ संगृहीत किया जाता है, वह तथाकथित वस्तु अथवा अवस्था के दाम अथवा कीमत से लिया जाता है। 'संस्कृत हिन्दी कोश में प्रयुक्त 'मूल्य' शब्द संस्कृत की मूल धातु के साथ 'थत्' प्रत्यय संयुक्त कर देने से बना है, जिसका अर्थ कीमत मजदूरी आदि होता है।' इसी प्रकार मूल्य के विषय में हिन्दी–विश्वकोश में भी लिखा गया है, 'मूलेन अनाश्यते अभिभूयते मूलेन समं वा इति मूल' अर्थात् किसी वस्तु के बदले में मिलने वाली कीमत। अतः मूल्य किसी भी वस्तु के मूल्यांकन का पैमाना है।

मानव मूल्यों का सम्बन्ध मानव के आन्तरिक चिंतन और बाह्या व्यवहार से है। मानव को उनके पूर्ण अस्तित्व में स्वीकार करके ही मानव–मूल्यों की कल्पना सम्भव होगी। महाभारत में भी स्पष्ट कहा है कि सृष्टि में मानव ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। अनेक चिन्तकों ने मानव को श्रेष्ठ कहा है, क्योंकि वह ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है। अपने जीवन में मानव ज्ञाता, व्याख्याता और निर्णायक स्वयं है। अतः मानव–मूल्यों का सम्बन्ध मानव से ही है।

'मानव–मूल्य' दो शब्दों से मिलकर बना है–मानव और मूल्य। मानव–मूल्यों की प्रमुख विशेषता है कि ये व्यक्तिगत होते हुए भी समष्टिगत होते हैं। इन मूल्यों के आधार पर ही मानव उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है और साथ ही ये मूल्य समाज हितकारी और लोकमंगलकारी भी होते हैं। मानव–मूल्यों के बिना मानव अस्तित्व निरर्थक है। साहित्य का विषय मानव जीवन है और मानव जीवन का शाश्वत लक्षण है–गतिशील होना अर्थात् निरन्तर परिवर्तनशील होना। ऐतिहासिक परिस्थितियों की द्वन्द्वात्मक परिणति में नए जीवन–मूल्यों का निर्माण

होता है, जो इतिहास की बदली हुई स्थिति में जीवन की श्रेष्ठता का मानदण्ड बन जाते हैं। हर ऐतिहासिक परिवर्तन के अवसर पर नए जीवन–मूल्यों के निर्धारण की आवश्यकता होती है। यह आवश्यकता भी मूल्यों को प्रतिपादित करती है। इसी नियम के कारण भिन्न–भिन्न कालों में भिन्न–भिन्न साहित्यिक मूल्यों की स्थापना होती है। मूल्य ही वह जीवन पथ हैं, जिससे मानव संस्कृति रूपी वृक्ष पल्लवित, पुष्पित तथा पफलित होता है, इसीलिए आज की संस्कृति मानवीय–मूल्यों के परिणाम की ही स्थिति है। मानवता के विकास में मानव–मूल्यों का ही हाथ रहा है। वस्तुतः मूल्य विवेक सम्मत् वैचारिक दृष्टिकोण हैं। मूल्यों का मानव–जीवन के प्रत्येक क्षेत्रा में महत्त्वपूर्ण स्थान है, भले ही विभिन्न क्षेत्राों में इनका स्वरूप अलग–अलग है। मूल्यों का महत्त्व व्यक्तिगत, सार्वजनिक और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न रूपों में है। ये मानव–समाज में एकता स्थापित करने का कार्य करते हैं। मूल्य बनते और बिगड़ते रहते हैं।

मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास में मानव–मूल्यों का महत्त्व निर्विवाद है। इन मूल्यों के निर्माण में भारतीय मनीषियों, चिन्तकों, विचारकों और साहित्यकारों ने भी अहम् भूमिका निभायी है, लेकिन ये मूल्य स्थायी नहीं होते। भौतिकता की प्रचण्ड आंधी के कारण इनमें तीव्रगत्या परिवर्तन होते रहते हैं। आज के बौद्धिक वातावरण में प्राचीनता के प्रति विद्रोह और नवीनता का आग्रह बढ़ता जा रहा है। परम्परागत रूढ़ियों के विरुद्ध नयी चेतना ने जन्म लिया है। स्वतन्त्रता के पाँच दशक पश्चात् तो जैसे मानव–मूल्यों में एक संक्रान्ति उत्पन्न हो गयी है, जिसने जीवन को नये ढंग से विश्लेषित करने की प्रक्रिया को उभारा है। परिवेशगत परिस्थितियों में इतना जबरदस्त बदलाव आया है कि मानव–मूल्यों सम्बन्धी नये दर्शन को समाज के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। मानव–मूल्यों के कतिपय नये विकल्प प्रकाश में लाये जा रहे हैं।

मानव–मूल्य संस्कृति के विरोधी नहीं होते अपितु धीरे–धीरे वे संस्कृति का अंग बन जाते हैं। ये गतिशील होते हैं और संस्कृति की जड़ता को भी दूर करते हैं। मानव को सार्थक बनाने में इन मूल्यों का बहुत योगदान रहता है, लेकिन जैसे–जैसे समाज में उतार–चढ़ाव आता है। परिस्थितियाँ परिवर्तित होती हैं और परिवेशगत दबाव बढ़ते हैं, उसी के अनुसार मानव–मूल्यों में भी परिवर्तन की प्रक्रिया घटित होती रहती है। इसी प्रकार से मानव–मूल्य भी विषय के अनुसार वर्गीकृत हो जाते हैं जैसे–वैयक्तिक मानव–मूल्य, पारिवारिक मानव–मूल्य, सामाजिक मानव मूल्य, राजनीतिक मानव–मूल्य, आर्थिक मानव–मूल्य आदि।

श्रीलाल शुक्ल और उनका रचना संसार :

हिन्दी साहित्य में अनेक प्रसिद्ध लेखक हुए हैं। श्रीलाल शुक्ल जी उनमें से एक हैं। इनका जन्म 31 दिसम्बर सन् 1925 में लखनऊ से लगभग 25 कि॰मी॰ की दूरी पर बसे गाँव अजरौली में हुआ और इनका निध्न 28 अक्तूबर 2011 को हुआ। ये समकालीन कथा–साहित्य में उद्देश्यपूर्ण व्यंग्यलेखन के लिए विख्यात थे।

हिन्दी साहित्य में श्री लाल शुक्ल जी का उत्कृष्ट स्थान है। शुक्ल जी ने अपना लेखन कार्य स्कूली शिक्षा के दौरान ही आरम्भ कर दिया था। जब वे 10–11 वर्ष के थे, तभी उन्होंने कहानियाँ लिखनी शुरू कर दी थीं। 19 वर्ष की आयु तक इन्होंने कईं निबंध, कहानियाँ और आलोचनाएँ लिखी थीं। लेकिन नियमित लेखन शुक्ल जी ने 1955–56 में शुरू किया। इन्होंने सबसे पहले 'स्वर्ण–ग्राम और वर्षा' नामक व्यंग्य रचना लिखी जो धर्मवीर भारती ने अपनी पत्रिाका 'धर्म युग' में छापी। फिर शुक्ल जी ने धर्मवीर भारती और अन्य मित्राों के प्रोत्साहन से अपना पहला उपन्यास लिखा। बस तब से शुक्ल जी ने कहानियाँ, व्यंग्य संग्रह और उपन्यास आदि लिखे जिनको साहित्यिक जगत में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त हुआ है। उनकी रचनाएँ हैं–'सूनी घाटी का सूरज' (1957), 'अज्ञातवास'

(1962), 'राग दरबारी' (1968), 'सीमाएँ टूटती हैं' (1973), 'आदमी का ज़हर' (1974), 'मकान' (1976), 'पहला पड़ाव' (1987), 'बिस्रामपुर का सन्त' (1998), 'राग–विराग' (2002) आदि उपन्यास। 'सुरक्षा तथा अन्य कहानियाँ' (1992), 'यह घर मेरा नहीं' (1995), 'इस उम्र में' (2004) कहानियाँ हैं और 'अंगद का पाँव' (1980), 'उमराव नगर में कुछ दिन' (1988), 'कुछ जमीन पर, कुछ हवा में' (1990), 'आओ बैठ लें कुछ देर' (1995), 'अगली शताब्दी का शहर' (1996), 'जहालत के पचास साल' (2004) आदि उनके व्यंग्य संग्रह हैं। इनके अतिरिक्त 'मेरे साक्षात्कार' के नाम से उनकी एक और पुस्तक 2002 में और 'खबरों की जुगाली' 2006 में प्रकाशित हुई।

शुक्ल जी का साहित्य हिन्दी साहित्य जगत को उनकी सर्वोत्तम देन है। शुक्ल जी ने अपने साहित्य में जहाँ आधुनिक युग को ध्यान में रखा है वहीं वे प्राचीन संस्कृति और सभ्यता को भी नहीं भूले। उन्होंने प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के माध्यम से आधुनिक मानव में ऐसे गुण भरने की कोशिश की है। जिससे मानव में नैतिक, सामाजिक आदि गुणों का विकास हो सके और दुर्गुणों से दूर रह सके।

(2) शोध का उद्देश्य :

मूल्यों का मानव–जीवन में बहुत महत्त्व होता है। मूल्य जीवन के प्रति वे मान्यताएँ हैं जो हमारे जीवन में वांछनीय हैं, जो हमारा मार्गदर्शन करती हैं, जिनके सहारे मानव–जीवन का मूल्यांकन एवं पोषण होता है। मूल्य शाश्वत एवं समसामयिक होते हैं और मूल्यों की स्थापना समाज द्वारा अपनी शुभ मान्यताओं के आधार पर की जाती है। मूल्य निर्माण के मूल में मनुष्य की अपूर्णता से पूर्णता की ओर जाने की लालसा है। मानव एक विवकेशील प्राणी है। वह अपनी विवेकशील अर्थात् संज्ञानात्मक चेतना के माध्यम से मूल्यों का निर्धरण करता है। मूल्यों का बोध उसके विकास का क्रम है, जिन तत्वों से मानव–जीवन अर्थवान महत्त्वपूर्ण होता है, वही मानव–जीवन के वास्तविक मूल्य हैं। वस्तुतः मूल्य एक ऐसा मापदंड है जो सम्पूर्ण संस्कृत एवं समाज को अर्थ एवं महत्त्व प्रदान करता है। मूल्य वह वस्तु है जो जीवन को सदैव विकास की ओर ले जाती है। वह वस्तु अन्तिम रूप से तथा स्वलक्ष्य की दृष्टि से मूल्यवान है जो कि व्यक्तियों को विकास अथवा आत्म–विश्वास या आत्म–अनुभूति की ओर ले जाती है।

मानव जीवन की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। जिसमें एक ओर नये मूल्यों का आविर्भाव होता है तो दूसरी ओर परम्परित मूल्यों का विघटन होता है। डॉ॰ धर्मवीर भारती ने मूल्यों के बारे में कहा है–इस मूल्य विघटन या संक्रमण की प्रक्रिया और परिवर्तन की विधायक शक्ति मानव में निहित होती है। अतः मानव जीवन एक वाटिका की तरह है, जिसमें अनेक रंगों व आकारों के जीवन मूल्य रूपी फूल खिलते हैं, झड़ते हैं और पुनः नया जीवन पाते हैं। मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में मूल्यों की स्थापना करना, उनकी वर्तमान स्थिति को जांचना, मूल्यों में आए विघटन के कारणों का पता लगाकर उनके विघटन को रोकना प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य हैं।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्यों को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा प्रकट किया जा सकता है–

1. श्रीलाल शुक्ल के जीवन एवं रचना संसार से पाठकों को अवगत करवाना
2. साहित्य जगत के अध्येताओं को मानव–मूल्य की जानकारी देना।
3. मूल्यों की आवश्यकता और महत्त्व से परिचति करवाना।
4. समाज में मूल्यों की यथार्थ स्थिति का अंकन करते हुए मूल्यों की स्थापना करना।
5. धर्म और नैतिकता के क्षेत्र में मूल्यों की स्थिति का वर्णन करना।
6. राजनीति में मूल्यों की स्थिति का वर्णन करना।
7. राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना कर उनका विकास करना।।
8. आर्थिक जगत में मूल्यों की स्थिति जानना।
9. सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्रों में मूल्य विघटन के कारणों को जानना।

(3) उपलब्ध साहित्य की समीक्षा :

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य समाज के अंतः संघर्ष व उतार–चढ़ावों को एक रचनाकार अपनी कृति के माध्यम से चित्रित करता है। साहित्य का मानव–जीवन से चिरन्तन एवं घनिष्ठ संबंध है। साहित्य के द्वारा मानव जीवन के विविध रूपों, घटनाओं, समस्याओं, भावनाओं विचारों व मानदंडों को अभिव्यक्ति मिलती है। साहित्य मानव जीवन सापेक्ष होता है और मानव–जीवन साहित्य से प्रेरित एवं परिचालित होता रहता है। गतिशील व विकासशील मानव जीवन में मानव के दृष्टिकोणों, धारणाओं, विचारों और आदर्शों में अथवा उसके जीवन में समय के साथ–साथ परिवर्तन आना अनिवार्य है। मानव–मूल्य मानव–जीवन और समाज की उच्चत्तर सोपानों की ओर बढ़ाने में सहायता करते हैं। हमें एक परिष्कृत तथा श्रेष्ठ जीवन–पद्धति प्रदान करते हुए एक सुसंस्कृत जीवन की पृष्ठभूमि के निर्माण में भी योगदान देते हैं।

सामाजिक स्थितियों और मूल्यों का अन्योन्याश्रित संबंध है। मूल्य यदि कई बार सामाजिक स्थितियों को बदलते हैं तो सामाजिक स्थितियों में परिवर्तन आने से मूल्यों में भी परिवर्तन आता है। इसलिए भी मूल्य शाश्वत नहीं परिवर्तन मान होते हैं। अतः नये जीवन–मूल्य पहले किसी एक ही व्यक्ति या समूह तक ही सीमित रहते हैं, फिर उस विचारधारा का प्रसार हो कर धीरे–धीरे ये मूल्य व्यापक और सर्वग्राह्य बनते हैं, नयी जीवन स्थितियों में मनष्य की रुचियों और आत्मीय संबंध भी परिवर्तित हो जाते हैं। संबंधों की यह बदली स्थिति नये जीवन–मूल्यों की सृष्टि में सहायता करती है।

मूल्य ही समाज के निर्माता हैं तथा संस्कृति को सही आधार प्रदान करने वाले हैं। मूल्य ही किसी समाज की आधारशिला हैं जिन पर किसी समाज का भव्य भवन अवस्थित है। मूल्यों की गरिमा और सौन्दर्य में किसी राष्ट्र की संस्कृति जीवित रहती है। ये मूल्य ही मानवीय संबंधों को स्थिर, व्यवस्थित तथा

विकसित करते हैं। सामाजिक तालमेल के लिए पारस्परिक आदान–प्रदान, समानता, न्याय, परिश्रम, मितव्यतता, सहयोग व एकता इत्यादि मुख्य जीवन मूल्य है। आज आस्था सहित जीना भी उपयोगी जीवन मूल्य है।

साहित्य और समाज में गहरा संबंध है। समाज से कटकर रचना धर्मिता महत्त्वहीन हो जाती है। प्रत्येक रचना कतिपय सामाजिक मूल्यों को आत्मसात् किए रहती है। वास्तव में साहित्यकार की सामाजिक चिंता उसके साहित्य में मुखरित होती है, जो उसे सामाजिक दायित्व बोध के प्रति जागरूकता प्रदान करती है। इसी से वह सामाजिक रूढ़ियों, आत्मविश्वासों और कृत्रिम नैतिकता का विरोध करते हुए समाज–हित में नई जीवन दृष्टि का प्रतिपादन करता है। इसी से उसका व्यक्तिगत मूल्य–चिन्तन भी समाज सापेक्ष होता है। इसी दृष्टि से श्रीलाल शुक्ल का मूल्य चिन्तन भी सामाजिकता को आत्मसात् किए हुए है। इसमें मानव समता और न्याय को सर्वोपरि स्थान मिला है। श्रीलाल ने सामाजिक वैषम्य और भेदभाव का विरोध किया है और सामाजिक अन्याय, अनाचार, स्वार्थपरता, अस्पृश्यता के साथ–साथ व्यक्ति–स्वातंत्रय व पारिवारिक मूल्यों को उजागर करने का सफल प्रयत्न किया है। यद्यपि इससे पूर्व कुछ शोधार्थियों ने श्रीलाल शुक्ल के जीवन दर्शन पर शोधकार्य किया है, परन्तु उनके कथा–साहित्य पर अब तक मानव–मूल्यों के संदर्भ में कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। यहां इस बात का उल्लेख करना भी आवश्यक है कि हिन्दी शोधकार्य के अंतर्गत नारी–चेतना, पात्र–चित्रण, भाषा–शैली, साहित्य एवं रचना संसार विषयों पर देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में शोधकार्य काफी मात्रा में सम्पन्न हुए हैं। साहित्यकारों के कथा–साहित्य अथवा उनके द्वारा रचित किसी अन्य विधा के साहित्य में मानव–मूल्य विषय पर शोध नाममात्र ही हुआ हैं। ऐसे में श्रीलाल शुक्ल जैसे प्रतिभाशाली साहित्यकार के कथा–साहित्य में मानव–मूल्य विषय पर शोधकार्रू करना मानव–मूल्यों को गति प्रदान करना है।

वस्तुतः मूल्य विवेक सम्मत् वैचारिक दृष्टिकोण हैं। मूल्यों का मानव–जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है, भले ही विभिन्न क्षेत्रों में इनका स्वरूप अलग–अलग है। मूल्यों का महत्त्व व्यक्तिगत, सार्वजनिक और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न रूपों में है। ये मानव–समाज में एकता स्थापित करने का कार्य करते हैं। मूल्य बनते और बिगड़ते रहते हैं। श्री लाल शुक्ल जी के कथा–साहित्य में मूल्यों का अत्यधिक वर्णन हुआ है और ताज्जुब की बात यह है कि किसी शोधकर्ता का ध्यान इस ओर नहीं किया।

(4) शोध की विधि :

सर्वप्रथम श्रीलाल शुक्ल के साहित्य को संग्रह करने का प्रयास किया जाएगा। उनके द्वारा रचित 9 उपन्यास संग्रह और 3 कहानी संग्रह को संग्रहित कर उनकी कथावस्तु और शुक्ल जी की विचारधारा को समझने का प्रयास किया जाएगा। इसके साथ–साथ शुक्ल जी के कथा–साहित्य में मानव–मूल्यों की खोज करने के अलावा मानव–मूल्यों से संबंधित अन्य शोध ग्रंथों, पुस्तकों और अन्य साहित्यिक सामग्री का अध्ययन करने और मानव–मूल्यों के विभिन्न पहलुओं को समझकर साहित्य के अध्येताओं और समाज को जानकारी देने का प्रयास किया जाएगा। मानव–मूल्य के उद्देश्य से श्रीलाल शुक्ल के साहित्य का सूक्ष्म अध्ययन करके विषय का विश्लेषण एवं शोध विषय के निष्कर्ष को प्रस्तुत किया जाएगा। श्रीलाल शुक्ल जी के कथा–साहित्य का अध्ययन और उस अध्ययन से प्राप्त मानव–मूल्य के निष्कर्ष इस शोध विषय के प्रमुख आधार रहेंगे।

(5) अध्ययन की रूपरेखा :

प्रथम अध्याय : श्रीलाल शुक्ल का जीवन और रचना संसार

द्वितीय अध्याय : मानव मूल्य : सैद्धान्तिक परिचय

तृतीय अध्याय : श्री लाल शुक्ल के कथा–साहित्य में सामाजिक मूल्य

चतुर्थ अध्याय : श्री लाल शुक्ल के कथा–साहित्य में राजनीतिक व राष्ट्रीय मूल्य

पंचम अध्याय : श्रीलाल शुक्ल के कथा–साहित्य में धार्मिक व नैतिक मूल्य

षष्टम अध्याय : श्री लाल शुक्ल के कथा–साहित्य में आर्थिक–मूल्य

सप्तम अध्याय : श्री लाल शुक्ल का कथा साहित्य में विघटित मानव–मूल्य

अष्टम अध्याय : उपसंहार

संदर्भ ग्रन्थ–सूची

क) आधार–ग्रन्थ

ख) सहायक ग्रन्थ

ग) कोश–ग्रन्थ

घ) पत्र–पत्रिकाएँ

संदर्भ ग्रन्थ–सूची

आधार ग्रन्थ :

श्रीलाल शुक्ल जी द्वारा रचित उपन्यास संग्रह :

1. श्री लाल शुक्ल — सीमाएँ टूटती हैं
   राजकमल प्रकाशन लिमिटेड, 1–बी,
   नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002,
   संस्करण–1973
2. श्री लाल शुक्ल — आदमी का ज़हर
   राजकमल प्रकाशन लिमिटेड, 1–बी,
   नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002,
   संस्करण–1974
3. श्री लाल शुक्ल — मकान
   राधकृष्ण प्राईवेट लिमिटेड, 2/38, अंसारी मार्ग,
   दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण–1976
4. श्री लाल शुक्ल — अज्ञातवास
   राजकमल प्रकाशन लिमिटेड, 1–बी,
   नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002,
   संस्करण–1982
5. श्री लाल शुक्ल — राग दरबारी
   राजकमल प्रकाशन लिमिटेड, 1–बी,
   नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002,
   संस्करण–1983

6. श्री लाल शुक्ल — सूनी घाटी का सूरज
राजकमल प्रकाशन लिमिटेड, 1–बी,
नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002,
संस्करण–1987

7. श्री लाल शुक्ल — पहला पड़ाव
राजकमल प्रकाशन लिमिटेड, 1–बी,
नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002,
संस्करण–1987

8. श्री लाल शुक्ल — बिस्रामपुर का सन्त
राजकमल प्रकाशन लिमिटेड, 1–बी,
नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002,
संस्करण–1998

9. श्री लाल शुक्ल — राग–विराग
राध कृष्ण प्रा॰ लिमिटेड, 2/38, अंसारी मार्ग,
दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2002

श्रीलाल शुक्ल जी द्वारा रचित कहानी संग्रह :

1. श्री लाल शुक्ल — सुरक्षा और कहानियाँ
राजकमल प्रकाशन लिमिटेड, 1–बी,
नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002,
संस्करण–1992

2. श्री लाल शुक्ल — यह घर मेरा नहीं
किताब घर प्रकाशन, 24, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली–110002, प्र॰सं॰ 1995

3. श्री लाल शुक्ल — इस उम्र में
राजकमल प्रकाशन लिमिटेड, 1–बी,
नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002,
संस्करण–2007

सहायक ग्रन्थ :

1. डॉ॰ अरुणा गुप्ता — छठे दशक की हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य
इन्द्र प्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्र॰सं॰ 1989

2. उषा रानी — विजेन्द्र स्नात्तक के निबन्ध–संग्रह 'अनुभूति के क्षण' में मानव–मूल्य
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, निर्देशक धर्मपाल सैनी, 1787–88

3. डॉ॰ गोविन्द चन्द्र पाण्डेय — मूल्य मीमांसा
राजस्थान हिन्दी अकादमी, जयपुर, 1973

4. डॉ॰ धर्मवीर भारती — मानव–मूल्य और साहित्य
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी, 1960

5. बाबू गुलाब राय — राष्ट्रीयता
गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा, 1961

6. डॉ॰ भागीरथ बड़ोली — मानव–मूल्य और उपलब्धियाँ
इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, 1983

7. डॉ॰ मोहिनी शर्मा — हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य
साहित्य सागर, जयपुर, 1986

8. डॉ॰ रमेशचन्द्र लबानिया — हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य
अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, यू.पी., 1973

9. डॉ॰ राधाकृष्णन् — धर्म और समाज
राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1965

10. रामचन्द्र शुक्ल — हिन्दी साहित्य का इतिहास
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1972

11. डॉ॰ शशि भूषण सिंहल — हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, प्र॰ सं॰ 1970

12. सत्यकेतु विद्यालंकार — समाजशास्त्र
श्री सरस्वती सदन, मंसूरी, 1980

13. हजारी प्रसाद द्विवेदी — हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982

14. डॉ॰ हासिल सिंह — रचना, रचनाकार और मानव–मूल्य
शोध प्रकाशन, चण्डीगढ़

15. डॉ॰ हुकमचन्द राजपाल — आधुनिक काव्य में जीवन मूल्य
भारतीय संस्कृति भवन, जालंधर, 1970

कोश–ग्रन्थ :

1. सं॰ कालिका प्रसाद — बृहत् हिन्दी कोश
ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 1977

2. सं॰ धीरेन्द्र वर्मा — हिन्दी साहित्य कोश
ज्ञानमण्डल लि॰ वाराणसी, 1973

3. सं॰ श्री नवल जी — नालन्दा विशाल शब्द सागर
न्यू इम्पीरियल बुक डिपो, दिल्ली, नई सड़क

4. सं॰ डॉ॰ नगेन्द्र — मानविकी परिभाषिक कोष (साहित्य खण्ड)
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1965